छत्तीसगढ़ में ऋषिचिंतन को जन-जन तक पहुँचा रहे हैं नवयुग के रींछ-वानर

छुरा, जिला रायपुर (छत्तीसगढ़) में २से ५ फरवरी की तारीखों में विद्या विस्तार का एक महान अनुष्ठान १०८ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ

छुरा में युग सेनानियों की विशाल वाहिनी के समक्ष स्मारिका 'देवभूमि' का विमोचन करते हुए आद. डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

आयोजित हुआ। ४ फरवरी को आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी छुरा पहुँचे। उन्हें सुनने एवं आशीर्वाद पाने के लिए लगभग २० हजार भावनाशील लोगों की विशाल जनमेदिनी उपस्थित थी।

आदरणीय डॉ. साहब ने परम पूज्य गुरुदेव के दिशा-निर्देशों पर चलते हुए रामराज्य की स्थापना करने को आतुर युग सेनानियों को भगवान का प्यार पाकर जीवन सफल बनाने के कई महत्त्वपूर्ण सूत्र दिये। अपने दीक्षा उद्बोधन में उन्होंने कहा कि समर्पण ही शिष्य की सच्ची कसौटी है। जो अपने को गुरु के हाथों की कठपुतली मान लेता है और बिना किसी शंका और बहाने के उनके निर्देशों का पालन करता है, उसे प.पू. गुरुदेव जैसी महान गुरुसत्ता से शक्ति और संरक्षण अवश्य ही प्राप्त होता है। इस संदर्भ में उन्होंने कई उदाहरण बताये, जिसमें अपने युगनिर्माण आन्दोलन में ही नगण्य-सी सामर्थ्य वाले लोगों ने बड़े काम कर लिए।

छुरा की जनसभा में शांतिकुंज प्रतिनिधि ने विद्या विस्तार को 'रामसेतु' निर्माण जैसा कार्य बताया। उन्होंने कहा कि हमें अपने गुरु के क्रांतिकारी विचारों के सहारे ही जन-जन के मन में पहुँचना है और वहाँ छिपी बैठी बुराइयों को दूर करना है। यही आज का राम-रावण युद्ध है। इस कार्यक्रम में हजारों लोगों ने गुरुदीक्षा ग्रहण की।

छुरा के १०८ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में ज्ञान विस्तार के अनेक आयाम थे। यज्ञ के साथ श्री श्याम बिहारी दुबे जी की टोली द्वारा प्रज्ञापुराण कथा हुई। गायत्री परिवार जशपुर के कार्यकर्त्ताओं ने सप्तआन्दोलनों पर बहुत ही विशाल एवं प्रभावशाली प्रदर्शनी लगायी थी, जिसे देखने के लिए प्रबुद्ध वर्ग के लोग दूर-दूर से आये और युग निर्माण आन्दोलन के प्रति अपना समर्थन-सहयोग व्यक्त किया। स्थानीय परिजनों ने समाज में प्रचलित तमाम कुरीतियों पर कुठाराघात करने वाले गीत, नाटक, एकांकी आदि प्रस्तुत कर उनकी ओर सफलता पूर्वक जनमानस का ध्यानाकर्षण किया।

गुरुदीक्षा से पूर्व आद. डॉ. साहब शक्तिपीठ पहुँचे और देव प्रतिमाओं को नमन किया। अपनी संक्षिप्त यात्रा में उन्होंने कार्यकर्त्ताओं से चर्चा-परामर्श करते हुए क्षेत्रीय योजनाओं पर मार्गदर्शन दिया। ☯

'पहुना' में मुख्यमंत्री जी से वार्ता

छुरा के महायज्ञ से लौटते हुए आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री माननीय डॉ. रमन सिंह के आमंत्रण पर राजकीय अतिथि गृह 'पहुँना' पहुँचे। उनके साथ प्रांत के प्रमुख प्रतिनिधि डॉ. अरुण मढ़रिया, श्री नंदकिशोर सुरजन आदि भी थे। मुख्यमंत्री जी ने सपत्नीक शांतिकुंज प्रतिनिधियों का पारिवारिक

मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी तथा छत्तीसगढ़ के प्रमुख प्रतिनिधियों के साथ चर्चा करते हुए

स्तर पर हार्दिक स्वागत किया। तत्पश्चात उन्होंने राज्य के विकास में निरंतर बढ़चढ़ कर भागीदारी कर रहे गायत्री परिवार का आभार व्यक्त किया। उन्होंने आदरणीय डॉ. साहब के साथ राज्य के शैक्षिक, सांस्कृतिक पुनरुत्थान और आतंक जैसी प्रमुख समस्याओं के समाधान के लिए परस्पर विचारों का आदान-प्रदान किया। उल्लेखनीय है कि एक दिन पूर्व ही डॉ. रमन सिंह को सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश तथा मान. श्री टी.एन. शेषन से '**भारत अस्मिता जन प्रतिनिधि श्रेष्ठ राष्ट्रीय सम्मान**' का पुरस्कार प्राप्त हुआ था। उन्होंने इसके निमित्त मिली **सवा लाख रुपये** की धनराशि को राज्य में आतंक के शिकार बच्चों के संरक्षण, पालन, संस्कार संवर्धन की योजनाओं के लिए आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी को भेंट कर दिये, जिसे उन्होंने गायत्री परिवार, राजनांदगाँव द्वारा चलाये जा रहे '**माँ भगवती वात्सल्य मंदिर**' को सौंप दिया। राज्य में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के घटक महाविद्यालयों की स्थापना के संदर्भ में भी मुख्यमंत्री जी के साथ चर्चा हुई।

महाविद्यालयों में विद्या विस्तार

बेतिया (बिहार)

कड़ाके की ढंड के बावजूद दिनांक २५ से २८ दिसम्बर २००७ की तारीखों में बेतिया में सम्पन्न १०८ कुण्डीय विद्या विस्तार गायत्री महायज्ञ अपने आप में अनेक उपलब्धियों से भरा रहा। कार्यक्रम में २५० दीक्षा, २०० नामकरण, मुण्डन तथा ५५ उपनयन संस्कार सम्पन्न हुए।

कार्यक्रम का आरंभ ५५१ कलशों की मनमोहक शोभायात्रा से हुआ। नगर के कई विद्यालयों द्वारा निकाली गयी नारी जागरण, नशा मुक्ति आदि से संबंधित झाँकियाँ विशेष आकर्षण का केन्द्र रहीं। नगर वासियों ने पुष्प वर्षा के साथ नवयुग के उल्लास का जोरदार स्वागत किया। यज्ञ स्थल पर पहुँचने पर जिला परिषद् अध्यक्ष श्रीमती रेणु देवी ने आरती उतारी।

शांतिकुंज से आयी श्री नमोनारायण पाण्डेय जी की टोली द्वारा संचालित इस महायज्ञ के प्रभाव से महारानी जानकी कुँअर महाविद्यालय, रामलखन सिंह यादव महाविद्यालय तथा सरस्वती विद्या

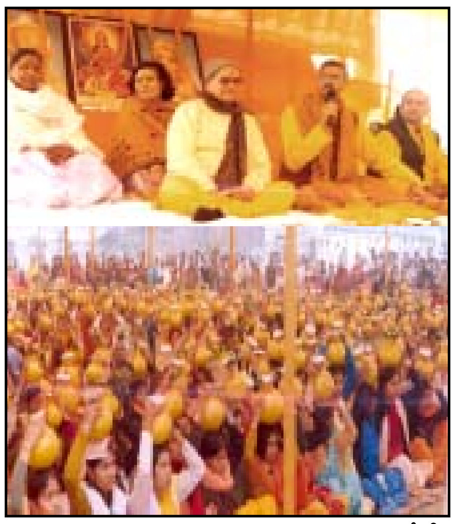

मंदिर में परम पूज्य गुरुदेव के वाड्.मय के सभी ७० खण्डों के सेटों की स्थापना हुई। दोनों महाविद्यालयों के प्राचार्यों ने अपने कॉलेजों में सेमीनार आयोजन का प्रस्ताव रखा।

अंतिम दिन नगर के बुद्धिजीवियों एवं शिक्षाविदों की एक संगोष्ठी सम्पन्न हुई, जिसमें स्थानीय महाविद्यालयों के प्राचार्य, प्राध्यापक, वैज्ञानिक, अल्प संख्यक समुदाय के प्रतिनिधियों ने भाग लेकर 'भारत के नवनिर्माण के लिए नयी पीढ़ी के चिंतन, चरित्र, व्यवहार एवं व्यक्तित्व के परिष्कार के लिए शिक्षा एवं विद्या का समन्वय' विषय पर अपने-अपने विचार रखे। विषय का प्रतिपादन यज्ञ संयोजक श्री नागेश्वर दत्त पाण्डेय ने किया। यज्ञ की सफलता में पं. रामानंद त्रिपाठी, सर्वश्री किशोरीलाल सीकरिया, डॉ. एस.एन. त्रिपाठी, अजय कुमार श्रीवास्तव आदि का अग्रणी योगदान रहा। ☯

दक्षिण गुजरात का दिव्य और भव्य सम्मेलन

दक्षिण गुजरात के नवसारी नगर में २५१ कुण्डीय विशाल गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। श्रद्धा से सराबोर जनमेदिनी, यज्ञ समारोह की दिव्यता एवं भव्यता देखते ही बनती थी। इस महायज्ञ में १ फरवरी को अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख प्रतिनिधि आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की उपस्थिति ने जनभावनाओं को युगक्रांति की दिशा में आन्दोलित कर दिया। उन्होंने दक्षिण गुजरात के परिजनों को माँ गायत्री को शक्तिपीठों तक ही सीमित न रखकर उसे विश्वमाता बनाने की प्रेरणा प्रदान की।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने नवसारी के कार्यकर्त्ता सम्मेलन में कहा कि नवसारी, सूरत, बलसाड़ का पूरा क्षेत्र हरा-भरा है। यह हरियाली हमारे आध्यात्मिक जीवन में भी साफ दिखाई देनी चाहिए। हम युगऋषि के शिष्य हैं, एक आदर्श गुरु और सच्चे ब्राह्मण के शिष्य हैं। हमें आदर्शों से असीम प्यार

करते हुए तपोमय जीवन जीना चाहिए। हम सस्ते पंडित बनकर न रह जायें, बल्कि ऊँचे आदमी बनें, ऊँचा काम करें और अपने समाज का पथ प्रदर्शन करें।

नवसारी के विशाल कार्यकर्त्ता सम्मेलन में आदरणीय डॉ.साहब ने जन्मशताब्दी वर्ष तक के तीन वर्षों में ३० साल का काम करने का आवाहन स्वजनों से किया। उन्होंने कहा कि 'मैं और मेरा' बड़े कार्यों की सफलता में सबसे बड़ी बाधा होती है। इस यज्ञ समारोह को एक यादगार समारोह बनाने का संकल्प लेते हुए हमें अपने संगठन के प्रति समर्पित होने का व्रत लेना चाहिए।

इससे पूर्व प्रातः नवसारी पहुँचने पर शांतिकुंज प्रतिनिधि ने यज्ञशाला में हजारों लोगों को दीक्षा दिलाई। इस अवसर पर उन्होंने गायत्री मंत्र की विविध रूप में व्याख्या करते हुए उसे आत्म परिष्कार एवं जीवन निर्माण की धुरी बताया। उन्होंने कहा कि गायत्री के साधक को एक विराट देव परिवार का सदस्य होने का गौरव अनुभव करना चाहिए। उसे अपने जीवन में गुरु की प्रेरणा एवं गुरु कृपा का अनुभव करना आना चाहिए। उसे धन, यश, वैभव, अहंकार आदि की संकीर्णताओं को तोड़ते हुए प्यार और सहकार से अपने 'स्व' का निरंतर विस्तार करना चाहिए। अपनी गुरुसत्ता पर दृढ़ विश्वास शिष्य की सबसे बड़ी शक्ति है। हमारे गुरु की सामर्थ्य अनंत है, हम अपनी पात्रता का विस्तार करके देखें तो उनके अनुदानों से हर पात्र छोटा पड़ता जायेगा। ☯

दिवंगत हुई देवात्माओं को श्रद्धांजलि

नागदा, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

परम पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य एवं प्रेरणा से गायत्री शक्तिपीठ नागदा की आधारशिला रखने वाले श्री भरतलाल वत्स का २२ दिसम्बर को देहावासन हो गया। परम पूज्य गुरुदेव के बताये जीवन आदर्शों की साधना के प्रभाव से उनके जीवन में ऐसा चुम्बकत्व था, जो जन साधारण को प्रभावित करता था। सेवा निवृत्त प्रधानाचार्य श्री ए.आर. शर्मा के अनुसार स्थानीय शाखा परिजनों ने अपने दिवंगत साथी श्री भरतलाल वत्स के निधन पर उनकी नैष्ठिक सेवाओं का भावभरे अंत:करण से स्मरण करते हुए माँ भगवती गायत्री एवं पावन गुरुसत्ता से उनकी आत्मशांति एवं सद्गति की भावभरी प्रार्थना की।

स्व. श्री भरतलाल वत्स

नागपुर (महाराष्ट्र) - गायत्री प्रज्ञापीठ, नागपुर की संस्थापक सदस्य सौ. मुक्ता बेन जोशी का २६ दिसम्बर २००७ को स्वर्गवास हो गया। अत्यंत हँसमुख, मृदुभाषी एवं मिलनसार व्यक्तित्व वाली स्व. सौ. मुक्ताबेन के निधन पर नागपुर के सैकड़ों परिजनों ने भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की।

स्व. श्रीमती मुक्ताबेन

रीवा (मध्य प्रदेश) -गायत्री शक्तिपीठ रीवा से जुड़ी सक्रिय कार्यकर्त्ता श्रीमती सत्या पाण्डे का ५ जनवरी २००८ को मुंबई में निधन हो गया। उन्होंने चित्रकूट अश्वमेध के समय १००० घरों में यज्ञ कराकर उन्हें गायत्रीमय बनाने का संकल्प लिया और पूरा किया था। वे पटना अश्वमेध के समय भी उसी तन्मयता के साथ सक्रिय रहीं।

रतलाम (मध्य प्रदेश) - रिंगनोद, जिला रतलाम निवासी ९४ वर्षीय वयोवृद्ध गायत्री साधक श्री शंकरराव सुपेकर ३० दिसम्बर २००७ को माँ गायत्री की दिव्य ज्योति में लीन हो गये। वे स्वयं नित्य प्रातः अनिवार्य रूप से मंत्रलेखन करते थे, और दूसरों को भी प्रेरणा देते थे। इस अवस्था में भी वे नियमित रूप से झोला पुस्तकालय चलाकर लोगों को सत्साहित्य पढ़ाते थे।

जालोर (राजस्थान) - गायत्री शक्तिपीठ जालोर पर सक्रिय वानप्रस्थी परिव्राजक श्री पूर्ण प्रकाश शास्त्री का मार्गशीर्ष अमावस्या, दिनांक ९ दिसम्बर को निधन हो गया। ६२ वर्षीय स्व.श्री शास्त्री जी एक समर्पित परिव्राजक थे। इसके अलावा वे शासकीय सेवाकाल के एक आदर्श शिक्षक के रूप में भी याद किये जाते रहेंगे।

अखिल विश्व गायत्री परिवार दिवंगत हुई समस्त देवात्माओं की शांति-सद्गति की प्रार्थना के साथ उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करता है। ☯

दुःख का मूल है पाप। पाप का परिणाम है-पतन, दुःख, कष्ट, कलह और विषाद। यह सब अनीति के अवश्यंभावी परिणाम हैं।